१४

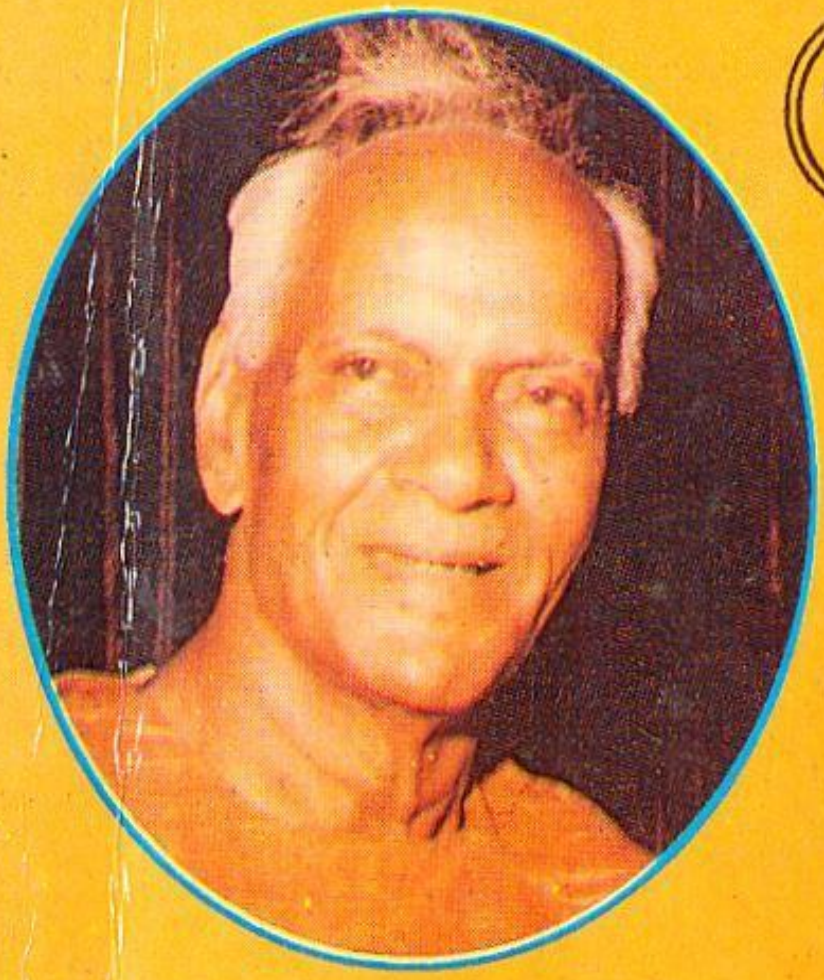

वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

वृक्ष हमारे जीवन प्राण

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI SANDIPBHAI PATEL,
MOHADEL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गुरुदेव के विपुल साहित्य के कुछ चुभते अंश

जहां फूल खिले होते हैं वहां दृष्टि अनायास ही खिंचती चली जाती है । दर्शकों का मन फूलों की तरह ही प्रफुल्लित हो उठता है । वृक्षों द्वारा छोड़ी प्राण वायु से प्राणियों का जीवन चलता है । वृक्षों के महत्व पर परम पूज्य गुरुदेव ने कुछ सूत्र इस लघु पुस्तिका में दिए हैं । इनका स्वाध्याय करें, प्रेरणा ग्रहण करें ।

दूरभाष : (०५६५)
४०४०१५/४०४०००

–लीलापत शर्मा
व्यवस्थापक
युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा–३

मूल्य : १.५० रु०

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मत्स्य पुराण में एक कथा आती है, जिसके अनुसार दस कुओं के निर्माण का पुण्य एक तालाब के निर्माण के बराबर तथा दस तालाबों का निर्माण एक सद्‌गुणी पुत्र के निर्माण के बराबर तथा दस सद्‌गुणी पुत्रों के बराबर पुण्य एक वृक्ष को तैयार करने का माना गया है ।

यहां पर वृक्षों के महत्व को दर्शाया गया है । वेदों, उपनिषदों तथा आर्ष ग्रंथों में इस संदर्भ में विस्तृत विवरण मिलता है कि महान् ऋषि, तत्वदर्शी किसी महल में नहीं अपितु वनों एवं वृक्षों के संपर्क में रहकर ही सूक्ष्म दृष्टि सम्पन्न बने और उन्हीं की छाया में सद्‌ग्रंथों का सृजन किया था । भगवान बुद्ध को राजमहलों में नहीं अपितु वट वृक्ष के नीचे बुद्धत्व प्राप्त हुआ था ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अरब राष्ट्रों में, जो इन दिनों विश्व में पेट्रोलियम आवश्यकता की पूर्ति करते हैं, कभी प्राचीन काल में घने जंगलों का विशाल भू–भाग था । काल चक्र के परिवर्तन के साथ साथ विशाल वन संपदा भूमिगत और ऊपर रेगिस्तान बन गया । यह उनके द्वारा किए गए दुष्कृत्यों की ही परिणति है । वातावरण के निर्माण में वृक्षों का जो महत्व है उस ओर अब धीरे धीरे पर्यावरण वैज्ञानिकों का भी ध्यान गया है । वर्तमान खोजों से यह तथ्य उभरकर सामने आया है कि एक वृक्ष प्राणवायु के रूप में ऑक्सीजन का विसर्जन करता है, जो करीब ६ लाख व्यक्तियों के लिए पर्याप्त है । दुर्भाग्य से यह वृक्ष भी कारखानों के मजदूरों की तरह कुछ घंटों के लिए सांकेतिक हड़ताल कर दें, तो सारा विश्व तबाह हो जाएगा ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्य वृक्षों की अपेक्षा पीपल के वृक्ष में कार्बन–डाइ–ऑक्साइड के शोषण की क्षमता तथा ऑक्सीजन के उत्सर्जन की क्षमता ज्यादा है । इस तथ्य को हमारे ऋषियों, मुनियों ने भी समझा था, इसी कारण भारतीय हिन्दू धर्म में पीपल के वृक्ष को काटना प्रतिबंधित माना है ।

वृक्षों की कमी के कारण ही वातावरण प्रदूषण की समस्या पैदा हो गई है । यदि वृक्ष लगाकर इसे रोका न गया तो कार्बन–डाइ–ऑक्साइड की अधिकता से वातावरण में गर्मी बढ़ेगी और ध्रुवीय क्षेत्रों की बर्फ पिघल कर समुद्र का जल स्तर ऊंचा होने व जल प्रलय आने की स्थिति पैदा हो सकती है ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विष्णु पुराण में उल्लेख है कि फल–फूल देने वाले वृक्ष को जहां विनष्ट किया जाता है वहां अनावृष्टि, अतिवृष्टि और दुर्भिक्ष जैसे संकट अवश्यम्भावी हैं । इसी में आगे कहा गया है कि जिन्हें कुल और धन की रक्षा और वृद्धि करनी हो उन्हें फलदार वृक्षों की रक्षा एवं अभिवृद्धि करनी चाहिए ।

अग्निपुराण में वृक्षों की महिमा का स्पष्ट उल्लेख है । उसमें कहा गया है कि उद्भिदों जैसा उपकारक अन्यत्र नहीं जो अयाचित बिना किसी भेदभाव और बदले की भावना के पत्र, पुष्प, फल और मूल, वल्कल और काष्ठ तथा मधुरिमा छाया से सभी प्राणियों का उपकार करते रहते हैं ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद् वृक्षमानव डॉ. रिचार्ड बेकर का कहना है कि सघन वट वृक्षों की वायु में एक विशेष प्रकार की आर्द्रता होती है, जिससे उसके आस पास के निवासी स्वस्थ एवं सक्रिय बने रहते हैं । पेड़ों के कटते चले जाने से रोगों के संक्रमण की दर बढ़ती चली जाती है । श्वांस एवं त्वचा के रोग इसके दुष्परिणाम हैं ।

शरीरशास्त्रियों के मतानुसार ऑक्सीजन जीवन का स्रोत है । वातावरण में उसकी कमी न केवल शारीरिक रुग्णता पैदा करती है वरन् अनेकों प्रकार के रोगों को भी जन्म देती है । स्वच्छ एवं प्रचुर प्राणवायु के अभाव में मस्तिष्क संस्थान असंतुलित हो जाता है । फलतः मनःस्थिति विक्षुब्ध, उत्तेजित, आवेशग्रस्त रहती है ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यूनेस्को में वैज्ञानिकों के सम्मेलन के अध्यक्ष ब्लादीमिर कजीना ने चेतावनी देते हुए कहा कि ''यदि वृक्ष नहीं रहेंगे तो मनुष्य भी नहीं रहेगा ।''उनके अनुसार अमेरिका में लू, रूस में बाढ़, भारत में मौसम का अत्यंत अनियमित हो जाना, जगह जगह बीमारियों, असाध्य रोगों में वृद्धि का कारण वन संपदा का निर्मम विनाश है । यदि समय रहते नहीं चेता गया तो सहारा रेगिस्तान की तरह स्थिति सारे विश्व की होगी । अतः समय आ गया है जब हमें वृक्षारोपण को अपनी महत्वपूर्ण गतिविधियों में सम्मिलित करना चाहिए । इसके लिए मकानों, जलस्रोतों और खेतों के चारों ओर के अतिरिक्त गांव के मिलने केन्द्र एवं पूजा के स्थानों के आस पास घनी छाया वाले फलदार वृक्ष लगाए जाने चाहिए ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वृक्षारोपण को देवाराधन के समकक्ष पुण्य फलदायी माना गया है । वन्य संपदा हमारे देश की सांस्कृतिक धरोहर है । हरियाली अमावस्या पर नए वृक्ष लगाने की चिरकालीन परंपरा अपने देश में रही है । इस कार्य को यदि हर गांव में एक छोटी नर्सरी बनाकर वहां से जनोपयोगी, घनी हरीतिमा वाले पौधे वितरित करने के कार्य को जोड़ा जा सके तो चारों ओर हरियाली का साम्राज्य छा सकता है । इस प्रकार भारत भूमि को निश्चित रूप से अधिक से अधिक सुजला, सुफला, शस्य श्यामला बनाया जा सकता है । वर्तमान समय में इससे बढ़कर पुण्य और हो ही नहीं सकता ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वृक्षारोपण ऐसा परमार्थ है, जो मात्र श्रम एवं उत्साह की सहायता से ही संभव हो जाता है । खाली जमीनों पर फलदार एवं जलाऊ लकड़ी के पेड़ लगाए जा सकते हैं । वन संपदा की वृद्धि से १. अधिक वर्षा होने, २. भूमि का कटाव रुकने, ३. जमीन की उर्वरता बढ़ने, ४. मौसम का संतुलन बनने, ५. उपयोगी प्राणवायु प्राप्त होने, ६. फल, छाया एवं लकड़ी मिलने, ७. हरीतिमा का उपयोगी मानसिक प्रभाव पड़ने, ८. पशु पक्षियों को आश्रय मिलने जैसे अनेकों लाभ हैं ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कीर्तिश्च मानुषे लोके प्रेत्य चैव शुभं फलम् ।
लभ्यते नाकपृष्ठे च पितृभिश्च महीपते ॥
देव–लोक गतस्यापि नाम तस्य न नश्यति ।
अतीतानागतश्चैव पितृवंशाश्च भारत ।
तारयेत् वृक्षरोपीतु तस्माद् वृक्षान् प्ररोपयेत् ॥

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

–महाभारत

''भरतनंदन ! वृक्ष लगाने से मनुष्य लोक में कीर्ति बनी रहती है और मृत्यु के पश्चात् स्वर्गलोक में शुभ फल की प्राप्ति होती है । वृक्ष लगाने वाला पुरुष पितरों द्वारा भी सम्मानित होता है । देवलोक में जाने पर भी उसका नाम नष्ट नहीं होता । वह अपने बीते हुए पूर्वजों और आने वाली संतानों को भी तार देता है । अतः वृक्ष अवश्य लगाने चाहिए ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तस्य पुत्रा भवन्त्येव पादपा नाच संशयः ।
परलोक गतः स्वर्गे लोकांश्चाप्नोति सोव्यान् ॥

—महा.

जिसके कोई पुत्र नहीं है, उसके वृक्ष ही पुत्र होते हैं, इसमें संशय नहीं है । वृक्ष लगाने वाला पुरुष परलोक में जाने पर स्वर्ग में अक्षय लोकों को प्राप्त करता है।

पुष्पैः सुरगणान् वृक्षाः फलैश्चापि तथा पितृन् ।
छायायां चातिथींस्तात पूजयन्ति महोरुहाः ॥

"तात् ! वृक्ष अपने फूलों से देवताओं का, फलों से पितरों का तथा छाया से अतिथियों का सदा पूजन करते रहते हैं ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूमि दानेनयेलोका गोदानेन च कीर्तिता: ।
तांल्लोकान्प्राप्नुयान्मर्त्य: पादपानां प्ररोपणे ॥

–लिखित

भूमि के दान से जो लोक प्राप्त होते हैं और जो गौ के दान से बतलाए हैं । उन्हीं लोकों को वृक्षों को लगाने से मनुष्य पाता है ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पुष्पिता: फल वन्तश्च तर्पयन्तीह मानवान् ।
वृक्ष दान पुत्र वद् वृक्षा: तारयन्ति परम च ॥
तस्मात् तटाके वृक्षा वै रोप्या: श्रेयोऽर्थिना सदा ॥

–दक्ष स्मृति

फल और फूलों से भरे हुए वृक्ष इस जगत् में मनुष्यों को तृप्त करते हैं जो वृक्ष, दान करते हैं उनको वे वृक्ष परलोक में पुत्र की भांति पार उतारते हैं । अत: कल्याण की इच्छा चाहने वाले को सदा ही सरोवर के किनारे वृक्ष लगाना चाहिए ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पेड़ पौधों के प्रति पूज्यभाव रखने की अपनी परंपरा सदियों पुरानी है । दुनियां में कोई भी देश ऐसा नहीं जिसमें एक त्यौहार केवल इसीलिए न मनाया जाता हो कि उस दिन हर व्यक्ति वृक्षारोपण अवश्य करे । यह पर्व भी ब्राह्मण पर्व कहलाता है—अर्थात् वृक्षारोपण को ब्रह्मकर्म के समतुल्य माना गया है । महाभारत ! ने तो एक वृक्ष लगाने को सौ पुत्रों से बढ़कर पुण्य माना है ।

इस उदात्त दृष्टिकोण में विराट् आत्मा की अनुभूति भी संयुक्त हो सकती है और आत्मीयता के विस्तार का प्रायोगिक प्रशिक्षण भी किसी दृष्टि से लें यह एक उपयोगी और आवश्यक ही नहीं अनिवार्य परंपरा रही है ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आज का विज्ञान भी स्वीकारता है कि मानवी अस्तित्व फ्लोरा (पृथ्वी के वनस्पति जगत) पर आधारित है । सूर्य से मिलने वाले अनुदान हम पचा नहीं पाते, यह वृक्ष ही हैं जो कच्चे अन्न को भोजन के रूप में पकाकर देने वाली मां की तरह सौर ऊर्जा को पहले स्वयं आत्मसात करते और पीछे हमारे लिए उपयोगी और प्राणदायी बनाकर वातावरण में बिखेर देते हैं । इनके गुणों को देखकर ही किसी विद्वान ने आज के बुद्धिवाद पर व्यंग करते हुए लिखा है कि आज लोग मेट्रोलॉजिकल प्लांट, थर्मोप्लान्ट, हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्लान्ट, प्रभृति प्लान्टों पर तो ध्यान देते हैं, पर प्लान्ट (पौधों) पर नहीं जिनके बिना मनुष्य का जीवन संकट में पड़ सकता है ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

थोड़े से भी थोड़ा पढ़ा लिखा व्यक्ति जानता है कि प्रश्वांस क्रिया में घुएं तथा पदार्थों के सड़ने आदि से उत्पन्न कार्बन–डाई–ऑक्साइड जो एक विषैली गैस है, उसे पेड़ पौधे ही सूर्य के साथ होने वाली फोटो संश्लेषण क्रिया में काम में लेकर ग्रहण कर लेते हैं और बदले में आक्सीजन गैस छोड़ते हैं । जीवधारियों की प्रश्वांस को अपनी श्वांस और अपनी प्रश्वांस को जीवन के लिए श्वांस बनाकर वृक्ष वनस्पतियां सृष्टि में जो ''इकोलॉजिकल संतुलन'' स्थापित करते हैं उसी के कारण सृष्टि टिकी हुई है किंतु मनुष्य उस संतुलन को बिगाड़ डालने और अपने हाथ अपनी ''खुदकशी'' करने को तुल पड़ा है ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जनसंख्या वृद्धि के साथ साथ अधिक कृषिभूमि, अधिक आवास, सड़कों, नहरों, फैक्टरियों, बड़े बड़े कारखानों के लिए अधिक जमीन चाहिए और यह सब जंगल साफ करके, वृक्षों का विनाश करके ही सम्भव है । वही हो रहा है जिससे आक्सीजन और कार्बन–डाई–आक्साइड का संतुलन बिगड़ रहा है । ऑक्सीजन की जमा पूँजी कम और खर्च करके बढ़ाने से पिछले ५० वर्षों में कार्बन–डाई–आक्साइड की मात्रा ०.०३० से बढ़कर ०.०४४ प्रतिशत बढ़ गई । इस असंतुलन को पाटने के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने की आवश्यकता है । अब इसे मात्र धार्मिक दृष्टि से नहीं अपितु जीवन रक्षा की दृष्टि से भी पूरा किया जाना चाहिए ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कार्बनडाई आक्साइड के अतिरिक्त कल कारखानों से सल्फर डाइ आक्साइड, कैडमियम, लेड, नाइट्रोजन आक्साइड का विष भी बुरी तरह बढ़ता जा रहा है । टोक्यो (जापान), न्यूयार्क (अमेरिका) तथा लंदन (इंग्लैंड) के कुछ क्षेत्र तो ऐसे हैं जहां सांस लेने तक में भी कष्ट होता है। यह विष मनुष्य देह में प्रतिदिन ४० सिगरेटें पीने के बराबर नुकसानदायक होता है । शीशे (लेड) का जहर किडनी डैमेज (गुर्दा नष्ट करना) ब्लड प्रेशर तथा मस्तिष्कीय क्रियाओं को क्षतिग्रस्त करता है। सल्फर डाइ आक्साइड से अस्थमा तथा श्वांस संबंधी कष्ट उठ खड़े होते हैं । हमारे देवता यह वृक्ष उस विष को पिएं नहीं तो हर व्यक्ति रोगशैया पकड़ ले ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक वृक्ष एक ऋतु में वायुमंडल से १३० लिटर पेट्रोल के शीशे का अंश सोखकर उसे लेड फास्फेट में बदल देता है । यह पानी में घुलता नहीं, उसे वह अपने आप में जीवन भर आत्मसात किए रहता है । बड़े कारखाने तो ताप पैदा करते हैं, स्वयं प्रकृति की गर्मी की असह्य मात्रा को भी संतुलित रखने में यह वृक्ष सहायक होते हैं ।

एटॉमिक रेडिएशन (अणु विकिरण) जैसे हानिकारक प्रभाव से भी वृक्ष हमारी जीनव रक्षा करते हैं । मान्ट्रियल स्थित मैकगिल यूनिवर्सिटी की गैस्ट्रो इन्टेस्टाइल रिसर्च लैबोरेटरी ने अपनी शोधों के आधार पर बताया है कि साधारण घास तक रेडियेशन से रक्षा करती है । अतएव पृथ्वी में हरीतिमा अभिवृद्धि, वृक्षारोपण, पुष्पवाटिका अभियान को नैतिक कर्तव्य के रूप में पूरा करना चाहिए।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शहरों में तो लॉन और पार्क इतने अधिक आवश्यक हैं कि उन्हें मनुष्य जीवन का हृदय ही कहा जा सकता है । वह मस्तिष्क को दृष्टि मात्र से निद्रा प्रदान करने वाली शीतलता देते हैं । यदि शहरों में पार्क न हों तो पागलपन की मात्रा इतनी बढ़ सकती है कि उसे संभालना कठिन हो जाए । जेट, हवाई–जहाजों, भारी मात्रा में रेलों, बसों, भारवाहनों तथा फैक्टरियों आदि के शोरगुल से कानों में सीधा आघात पहुंचाता है । वृक्ष न हों तो यह शोर गुल ही लोगों को बहरा बना दे सकता है । किसी भी रूप में वृक्षों के प्रति श्रद्धा व्यक्त किए बिना काम चलेगा नहीं । जंगल अनावश्यक न कटें यह कार्य सरकार देखे पर मनुष्य को तो स्थान स्थान पर वृक्षारोपण करना ही चाहिए ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वृक्ष वनस्पतियों और पशु पक्षियों समेत मनुष्य हरीतिमा के आधार पर जीवित रहते हैं । पशु घास खाते हैं और पेड़ों के पत्ते चरते हैं । मनुष्य का आहार अन्न के दाने, शाक, फल व वनस्पति हैं । यह ख़ाने को न मिले तो जीवित रहना संभव नहीं । मांसाहारी भी शाकाहारी प्राणियों का ही मांस खाते हैं । इस प्रकार जीवन को घास स्तर की तथा वृक्ष स्तर की वनस्पतियों पर ही निर्भर माना गया है । उसके उत्पादन और संरक्षण का पूरा ध्यान रखा जाए, तभी आवश्यकता की पूर्ति संभव है ।

वृक्ष दिन भर ऑक्सीजन उगलते रहते हैं और प्राणियों के सांस द्वारा छोड़ी हुई कार्बन डाइ ऑक्साइड को निगलते हैं इसलिए उन्हें नीलकंठ की उपमा दी गई है ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वृक्षों का चुम्बकत्व आकाश से बादलों को खींचता है और बरसने के लिए विवश करता है । जिन क्षेत्रों के वृक्ष कट जाते हैं, वहां वर्षा का अनुपात भी बहुत कम हो जाता है । लीबिया अब से १०० वर्ष पहले हरीतिमा से भरा हुआ था । तब वहां वर्षा खूब होती थी और घास के सहारे पशु भी पलते थे । इस बीच वहां जंगल कट गए । कीमती लकड़ी योरोप चली गई । वीरान क्षेत्र में वर्षा बंद हो गई और बहुत बड़ा इलाका रेगिस्तान बन गया । इस अभाव के कारण वहां कितनी दरिद्रता बढ़ी होगी, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वृक्षों की जड़ें जमीन में गहरी जाती हैं और वर्षा के प्रवाह में बह जाने से उसे रोके रहती हैं । वृक्ष न हों तो वर्षा का पानी न तो जमीन के भीतर रुकेगा और न पकड़ के अभाव में मिट्टी यथास्थान टिकी रहेगी, बहकर नदी नालों में चली जाएगी और भूमि की उपजाऊ ऊपर वाली परत न रहने पर घास पात नहीं उगेगी । मिट्टी वर्षा के पानी के साथ बहकर जब नदी नालों में जाती है तो उनकी सतह ऊपर उठती जाती है । गहराई कम होने पर पानी समतल भूमि में फैलता है और बाढ़ में फसल बह जाती है और खेत कहीं से कहीं जा पहुंचते हैं, बालू रेत से भर जाते हैं ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हरीतिमा का मानसिक स्तर पर बड़ा प्रभाव पड़ता है । प्राचीनकाल के ऋषि तपस्वी अपनी भाव चेतना को उच्चस्तरीय बनाए रखने के लिए सघन वनों में रहते थे । वृक्षरहित क्षेत्रो में मनुष्यों की मनोवृत्ति नीरस और दुष्ट हो जाती है और वहां अपराध, विग्रह अपेक्षाकृत अधिक होने लगते हैं ।

वृक्षों की जड़ें नीचे जमीन में जाती हैं, तो अपनी पकड़ के कारण वर्षा का पानी उस भूमि में रोके रहती हैं, फलतः उस क्षेत्र में उगने वाले पेड़ पौधों को खुराक मिलती रहती है । यदि पेड़ न हों तो समतल भूमि का पानी सर्राटे से बहकर नदी नालों में चला जाता है ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुओं का, झरनों का, तालाब बावड़ियों का पानी तभी अधिक दिन टिकता है, जब पेड़ों की जड़ें ऊपर की सतह को गीली रखती हैं अन्यथा कुएं सूख जाते हैं, उनका पानी गहराई में उतर जाता है । इन कारणों से मनुष्यों और पशुओं को पानी का त्रास सहना पड़ता है ।

वृक्षों के पत्ते तथा फूल ठंडक के दिनों में टूटकर जमीन पर गिरते हैं । वे सूखते और सड़ते रहते हैं, उनका खाद बनता रहता है । इस प्रकार जमीन को वृक्ष ऊपर से खाद बरसाते हैं और जड़ों से दूर दूर तक नमी रोके रहने के कारण पानी देते रहते हैं ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पक्षी पेड़ों पर ही रहते हैं । वे कितने ही उपयोगी काम करते हैं । एक तो यह कि फसल को नष्ट करने वाले कीड़े मकोड़े खाते रहते हैं और फसल की क्षति बचाते हैं । दूसरे यह कि अपने पंजों और पैरों के स्पर्श से जो पराग चिपका लेते हैं, उसे अन्य पेड़ पर बैठते समय मादा जाति के फूलों पर छिड़क देते हैं । फलस्वरूप उनको अच्छी तरह फलने का अवसर मिलता है यदि पक्षी इस कार्य को न करें तो नर पराग के अभाव में उनका फलना रुक जाएगा । छोटे फूल पौधों का पराग प्रत्यावर्तन मोरों, तितलियों, मधुमक्खों द्वारा होता है । इसलिए फूलने के बाद वे फल और बीज भी देते हैं । यह कार्य पेड़ों के फूलने के समय पक्षी करते हैं ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समुद्री टापुओं में जो वृक्ष वनस्पतियां पायी जाती हैं, उसे पक्षियों द्वारा बोया गया ही समझना चाहिए ।

अन्य पशु पेड़ों की छाया में ही सर्दी गर्मी और वर्षा की भयंकरता से अपना बचाव करते हैं । इसलिए पेड़ न केवल पक्षियों के लिए वरन् पशुओं के लिए भी आश्रय स्थल हैं । हिरन, लोमड़ी, खरगोश, सियार आदि जंगलों में ही खुराक एवं आश्रय प्राप्त करते हैं । उनके मलमूत्र, हड्डी, चमड़ा आदि से वन प्रदेश को कीमती खाद मिलती है और वह क्षेत्र सदा हरा भरा रहता है । वन्य पशु जहां अपनी खुराक जंगलों से प्राप्त करते हैं, वहां बदले में उस क्षेत्र को कीमती खाद भी देते रहते हैं ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सभी विचारशील देशों में प्राय: एक तिहाई जमीन वन लगाने के लिए छोड़ी जाती है । वे जानते हैं कि लकड़ी के लोभ में यदि उस क्षेत्र की सफाई कर डाली गई और खेत बना लिए गए तो इस छोटे लाभ के बदले जो हानि उठानी पड़ेगी, वह कहीं अधिक होगी । जमीन की मिट्टी बह जाएगी और खड्डे खंदक पड़ जाएंगे । जिनमें चोर डाकू मजे से आश्रय प्राप्त करते रहें । जमुना और चंबल के इर्दगिर्द पेड़ों को लगाने या बढ़ाने का प्रयत्न नहीं किया गया, फलत: किनारों के आस पास ही लाखों एकड़ जमीन खड्ड खंदकों से भर गई और उन इलाकों की असाधारण बढ़ोत्तरी हो गई । उनके भय से खुशहाल किसान और व्यापारी जान बचाने के लिए शहरों में चले गए ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दुधारू पशुओं को जंगल चरागाह में चरने भेजते रहने की सुविधा होने पर एक ग्वाला बीसियों पशुओं को चरा लेता है और उनके लिए खुराक की अतिरिक्त व्यवस्था नहीं करनी पड़ती । जहां पर यह सुविधा नहीं है, वहां पर घर बांध कर जानवर पालने पड़ते हैं और खरीदा हुआ चारा लेने पर वे बहुत मंहगे पड़ते हैं । गरीबों के बच्चे इतना मंहगा दूध न पा सकने के कारण अत्यंत दुबले रह जाते हैं और अकाल मृत्यु का शिकार बनते हैं । यदि जंगल चरागाह बने रहते तो पशुओं की इतनी कमी न पड़ती । दूध के अभाव में बच्चों को दुर्बलता, रुग्णता और अकाल मृत्यु का ग्रास बनना पड़ता ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक वृक्ष अपने ५० साल के जीवन काल में जितनी सेवा करता है, उसकी कीमत पैसे में जोड़ने पर पंद्रह लाख से अधिक आती है । एक वृक्ष ५० वर्ष की अवधि में ढाई लाख रुपए की ऑक्सीजन देता है । भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में ढाई लाख रुपए के बराबर की खाद जितनी सहायता करता है, प्रदूषण नियंत्रण के रूप में वायु प्रदूषक अवयवों की मुफ्त सफाई पांच लाख रुपए के बराबर करता है । आर्द्रता रोकने, वर्षा करने तथा खाद्य प्रोटीनों की कीमतें जोड़ने पर भी ५० वर्ष की अवधि में लगभग पांच लाख रुपए की राशि आती है ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राप्त आंकड़ों के अनुसार अपने देश में कुल भू–भाग के २३ प्रतिशत क्षेत्र में वन हैं, जबकि पर्यावरण संतुलन एवं देश के आर्थिक विकास के लिए कुल क्षेत्रफल का एक तिहाई भाग वनों से आच्छादित रहना आवश्यक है । भारत के वन क्षेत्र २ लाख ७४ हजार वर्ग मील में फैले हुए हैं, जो ३८ खरब ७८ अरब ११ करोड़ ३९ लाख ६० हजार वर्ग फीट के लगभग आता है । वर्ग फुटों में पेड़ों को गिना जाए, तो भारत के २३ प्रतिशत भू–भाग में फैले वृक्षों की संख्या १९ अरब ३९ करोड़ ५ लाख ६४ हजार ८ सौ होती है ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक वृक्ष काटने से अधिक से अधिक एक हजार रुपए कीमत की जलाऊ तथा अन्य निर्माण योग्य लकड़ी प्राप्त होती है, किंतु उसके बने रहने से प्रतिवर्ष ३० हजार की स्वच्छ ऑक्सीजन, उर्वरक पानी और वायु प्रदूषण निवारण का लाभ प्राप्त होता है । कटाई का अर्थ होगा लंबे समय तक प्रतिवर्ष ३० हजार रुपए के लगभग का जो योगदान प्रकृति के संतुलन के रूप में मिल सकता था, उससे वंचित रह जाना ।

वृक्षों की उपयोगिता और महत्वपूर्ण भूमिका का रहस्य उद्घाटन वैज्ञानिक विकास के समय हुआ । विश्व के मूर्धन्य वनस्पति शास्त्री पर्यावरण विशेषज्ञ अब एक स्वर से स्वीकार कर रहे हैं कि वृक्ष संपदा पर समस्त मानव जाति का अस्तित्व टिका हुआ है ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वनस्पति और प्राणियों का अन्योन्याश्रित संबंध है । एक जिएगा तो दूसरा जिएगा । मनुष्य का आहार वनस्पति है । जीवन की अधिकांश आवश्यकताएं इन्हीं के सहारे उपलब्ध होती हैं । ईंधन, मकान, शैया, कपड़े, अनाज, शाक, औषधि यह सभी वृक्ष वनस्पतियों के सहारे ही उपलब्ध होते हैं । पेड़ ही बादलों को खींचते और बरसने के लिए विवश करते हैं । उनके अभाव में किसी प्राणी का जीवन सुरक्षित नहीं । वनस्पतियां ऑक्सीजन छोड़ती हैं । उससे मनुष्य को सांस द्वारा वायु मिलती है । मनुष्य द्वारा छोड़ी कार्बन से पेड़ पलते हैं । प्राणियों द्वारा उपयोग में लाई लुई वनस्पतियां खाद बनकर वनस्पति उगाती हैं ।

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वृक्ष आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, शरीर निर्वाह और मानसिक संतुलन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं । जहां हरीतिमा नहीं होती वहां बंजर व रेगिस्तानों के निवासी क्रूर कठोर प्रकृति के पाए जाते हैं । अपराध, मनोरोग और विग्रह भी ऐसे क्षेत्रों में अधिक होते हैं । हरीतिमा न केवल नेत्रों को शीतलता एवं ज्योति प्रदान करती है वरन् मानसिक संतुलन बनाने, शालीनता एवं प्रसन्नता तथा बलिष्ठता प्रदान करने की भी भूमिका निभाती है । मनुष्य का कर्तव्य है कि स्वार्थ एवं साधना से लेकर परमार्थ प्रयोजन तक के समन्वय का दृष्टिकोण अपनाते हुए हरीतिमा संवर्धन के लिए प्रयत्नरत रहे । अपनी या पूर्वजों की स्मृति में वृक्षारोपण को श्राद्ध परंपरा की एक महत्वपूर्ण कड़ी समझा जा सकता है ।

मुद्रक : युग निर्माण प्रेस, मथुरा

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अधिक जानकारी के लिए आज ही स्वाध्याय का क्रम बनाकर आचरण करने के प्रयास में जुट जाएं ।

१.	संजीवनी विद्या का रहस्य भाग-१, भाग-२	१२.००
२.	मानसिक स्वास्थ्य	६.००
३.	योग की साधना	८.००
४.	प्राण चेतना में महाप्राण का अवतरण	६.००
		३२.००

विस्तृत सूचीपत्र निःशुल्क मंगाने के लिए स्थानीय युग साहित्य प्रचार केन्द्र अथवा युग निर्माण योजना, मथुरा-३ से सम्पर्क करें ।

वृक्ष हमारे जीवन प्राण

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

आत्मीय अनुरोध

इस पुस्तिका को अधिकाधिक व्यक्तियों तक पहुँचाने एवं पढ़ाने का प्रयास करें । इसे नववर्ष, दीपावली, होली आदि पर्वों पर तथा विवाह, जन्मदिन आदि मांगलिक अवसरों पर उपहार के रूप में देने के लिए अपने पास समुचित संख्या में मंगा कर रख लें । अन्य मंहगे व निरर्थक उपहारों की तुलना में यह छोटा सा सस्ता उपहार लाख गुना महत्वपूर्ण एवं प्रेरणाप्रद सिद्ध होगा ।

अपने सम्बंधियों एवं सम्पर्क क्षेत्र के सभी व्यक्तियों को भी अधिकाधिक संख्या में यह पुस्तिका मंगाने के लिए प्रोत्साहित करें ।